52

दृष्टांतों की शृंखला

(21:28-22:14)

यूहन्ना के बपतिस्मे पर अपने प्रश्न का यहूदी अगुओं से कोई स्पष्ट उत्तर न मिलने के बाद यीशु ने एक के बाद एक तीन दृष्टांत देते हुए उत्तर दिया (21:28-22:14)।

दो पुत्रों का दृष्टांत (21:28-32)

28"तुम क्या सोचते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे; उस ने पहिले के पास जाकर
कहा; 'हे पुत्र, आज दाख की बारी में काम कर।' 29उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जाऊंगा,'
परन्तु बाद में पछताकर गया। 30फिर पिता ने दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा, उस ने
उत्तर दिया, 'जी हां जाता हूं,' परन्तु नहीं गया। 31इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा
पूरी की?" उन्होंने कहा, "पहिले ने।" यीशु ने उन से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, कि
महसूल लेने वालों और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। 32क्योंकि
यूहन्ना धर्म के मार्ग दर्शाते हुए तुम्हारे पास आया, और तुम ने उसका विश्वास न किया;
पर महसूल लेने वाले और वेश्याओं ने उसका विश्वास किया: और तुम यह देखकर बाद
में भी न पछताए कि उसकी प्रतीति कर लेते।"

इस पहली कहानी से एक अर्थ में अधिकार के प्रश्न का उत्तर दे दिया गया और स्पष्ट कर दिया गया कि वास्तव में परमेश्वर की संतान कौन है। इन लोगों का मानना था कि वे परमेश्वर के प्रवक्ता हैं, यानी वे उसके अधिकार से बोलते हैं। उनके प्रश्न में इस बात का संकेत था कि यीशु परमेश्वर के अधिकार से बात नहीं करता था और इस कारण वह परमेश्वर का पुत्र और मसीहा नहीं हो सकता था।

आयतें 28-30. यीशु ने दृष्टांत का आरम्भ इस प्रश्न के साथ किया कि **"तुम क्या सोचते हो?"** वह अपने सुनने वालों का ध्यान खींचने और उन्हें सोचने पर विवश करने के लिए अक्सर ऐसा करता था (17:25; 18:12; 22:42)। यह कहानी **किसी मनुष्य** की है [जिस के] **दो पुत्र थे**। वह दोनों के पास यह विनती करते हुए कि उसकी **दाख की बारी में काम** करें एक ही प्रकार से और शिष्टाचार के ढंग से गया। दाख की बारी का रूपक बाइबल में आम मिलता है। कई बार इसका इस्तेमाल लोगों या परमेश्वर के राज्य के लिए किया जाता है (20:1 पर टिप्पणियां देखें)।

उस समाज में बेटों से अपने पिता का आदर करने और उसकी बात मानने की अपेक्षा की जाती थी, विशेषकर जब वे अभी उसकी ज़मीन पर हों।[1] कहानी वाला मनुष्य परमेश्वर को दर्शाता है जबकि दोनों पुत्र दो अलग-अलग तरह के यहूदियों का संकेत देते हैं। पिता की

विनती के बाद पहले वाले पुत्र ने तुरन्त उत्तर दे दिया, **''मैं नहीं जाऊंगा''** परन्तु बाद में उसने मन बदला और बारी में काम करने **गया**।[2] वह उन यहूदियों को दर्शाता है, जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था परन्तु बाद में पछताए थे। जब पिता ने वही विनती दूसरे पुत्र से की तो उसने तुरन्त उत्तर दिया, **''जी हां जाता हूं''; परन्तु** [फिर] **नहीं गया**। वह उन यहूदी लोगों को दर्शाता है जो परमेश्वर की आज्ञा मानने का दावा तो करते थे, परन्तु वास्तव में उसे मानते नहीं थे (देखें 23:3)।

आयत 31. दृष्टांत को मिलाने के बाद यीशु ने इन विद्वानों से एक प्रश्न पूछा, **''इन दोनों में से किसने पिता की इच्छा पूरी की?''** उन्होंने बिना अपना विचार किए तुरन्त और सही उत्तर दे दिया, **''पहले ने।''** फिर प्रभु ने अपनी बात साफ की, **''मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेने वाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।''** प्रधान याजक और पुरनिए बेशक दोष लगाने वाले इन शब्दों से नाराज़ हुए थे (21:45, 46)। ''महसूल लेने वाले और वेश्याएं'' दुष्टों के रूप में कहावत के रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला वाक्य है (5:46 पर टिप्पणियां देखें)। ऐसे लोगों ने यहूदी अगुओं से पहले राज्य में प्रवेश करना था, जिनके घमण्डी मन उन्हें बदलने से रोकते थे। परमेश्वर की अधीनता से इनकार करने की उनकी ढिठाई ने उनके लिए राज्य के द्वार बंद कर देने थे।

आयत 32. अरिमतिया के यूसुफ और निकुदेमुस जैसे कुछ यहूदी अगुवे अपने आपको दीन करके यीशु के चेले बन गए थे (27:57; मरकुस 15:43; यूहन्ना 19:38, 39); परन्तु अधिकतर अगुवे नहीं झुके थे। इन घमण्डी धार्मिक अगुओं के विपरीत यीशु ने कहा कि **महसूल लेने वाले और वेश्याएं** राज्य में प्रवेश कर जाने थे, क्योंकि उन्होंने अपने आपको दीन करके राज्य के सुसमाचार को स्वीकार कर लेना था।[3] धार्मिक अगुओं ने चाहे **यूहन्ना** (और स्वयं मसीह के) संदेश को नकार दिया था, परन्तु इन पापियों ने उद्धार के संदेश को तुरन्त मान लिया। मन फिराने और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की यूहन्ना की पुकार को लोगों की बड़ी भीड़ को मानते हुए देखने के बावजूद इनके कठोर मन नहीं पिघले थे।

गृहस्वामी और दाख की बारी का दृष्टांत (21:33-46)

[33]''एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्वामी था, जिसने दाख की बारी लगाई; और उसके चारों ओर बाड़ा बान्धा, उसमें रस का कुंड खोदा और गुम्मट बनाया, और किसानों को उसका ठेका देकर परदेश चला गया। [34]जब फल का समय निकट आया, तो उसने अपने दासों को उसका फल लेने के लिए किसानों के पास भेजा। [35]पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ के, किसी को पीटा, और किसी को मार डाला; और किसी पर पथराव किया। [36]फिर उस ने और दासों को भेजा, जो पहिलों से अधिक थे; और उन्होंने उन से भी वैसा ही किया। [37]अन्त में उस ने अपने पुत्र को उन के पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। [38]परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, 'यह तो वारिस है, आओ, उसे मार डालें: और उसकी मीरास ले लें।' [39]अत: उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला। [40]इसलिए जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?'' [41]उन्होंने उस से कहा, ''वह उन बुरे लोगों को

बुरी रीति से नष्ट करेगा; और दाख की बारी का ठेका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।''

[42]यीशु ने उन से कहा, ''क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा:

'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था,
वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया?
यह प्रभु की ओर से हुआ,
और हमारे दृष्टि में अद्‌भुत है।'

[43]इसलिए मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा। [44]जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा: और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा।'' [45]प्रधान याजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए, कि वह उसके विषय में कहता है। [46]और उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगों से डर गए, क्योंकि वे उसे भविष्यवक्ता मानते थे।

आयत 33. यीशु ने आगे कहा, ''**एक और दृष्टान्त सुनो**'' यह इस अवसर पर यीशु द्वारा बताई तीन कहानियों में से दूसरी है (21:28–22:14)। पिछले दृष्टांत में उसने ''तुम क्या सोचते हो?'' कहकर अपने सुनने वालों का ध्यान खींचा था (21:28)। इस मामले में उसने ''सुनो'' का अवश्य माननीय शब्द इस्तेमाल किया। वह अभी भी प्रधान याजकों और पुरनियों से बात कर रहा था (21:23, 28) और एक बार फिर यह दृष्टांत उन्हीं के विरुद्ध था (21:45, 46)।

यह दृष्टांत देते हुए यीशु ने यशायाह द्वारा दिए गए पहले उदाहरण को याद दिलाया होगा (यशायाह 5:1–7)। भविष्यवक्ता ने इस्राएल और यहूदा के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध को एक आदमी और उसकी दाख की बारी से मिलाया था:

> उस ने उसकी मिट्टी खोदी और उसके पत्थर बीनकर,
> उसमें उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई;
> और उसके बीच में उस ने एक गुम्मट बनाया,
> और दाखरस के लिए एक कुण्ड भी खोदा;
> तब उस ने दाख की आशा की,
> परन्तु उस में निकम्मी दाखें ही लगीं (यशायाह 5:2)।

इन दृष्टांतों में एक बड़ा अन्तर दिखाई देता है। मत्ती 21 में जहां समस्या दुष्ट किसानों (यहूदी अगुओं) की है वहीं यशायाह 5 में यह समस्या दाख (इस्राएल और यहूदा के लोगों) की है। तौभी दोनों दृष्टांतों का मूल फल वही है कि मालिक को कोई फल नहीं मिला।

यीशु ने यह कहते हुए अपने दृष्टांत का आरम्भ किया, ''**एक गृहस्वामी था, जिसने दाख की बारी लगाई।**'' अन्य दृष्टांतों की तरह गृहस्वामी परमेश्वर को (20:1 पर टिप्पणियां देखें) और दाख की बारी लोगों या परमेश्वर के राज्य को कहा गया है (21:43)। दाख की बारी को सुरक्षित और उपजाऊ बनाने के लिए गृहस्वामी जो भी कर सकता था उसने किया। तैयारी की सूची दाख की अपनी बारी के आदमी की देखभाल और पूरी तरह से उसके स्वामित्व को

रेखांकित करती है।

पहले गृहस्वामी ने अपनी दाख की बारी के **चारों ओर बाड़ा बांधा**। ''बाड़ा'' (*phragmos*) शब्द का अर्थ ''बाड़,'' ''दीवार,'' या ''घेरा'' हो सकता है। आम तौर पर दाख की बारी को जंगली जानवरों और चोरों से बचाने के लिए इसके गिर्द (भजन संहिता 80:12, 13) पत्थर की दीवार (गिनती 22:24; नीतिवचन 24:30, 31) या कांटों का घेरा लगा दिया जाता था (देखें नीतिवचन 15:19; होशे 2:6)।

फिर कटाई का अनुमान लगाते हुए उस आदमी ने **रस का कुण्ड खोदा**। ''रस का कुण्ड'' (*lēnos*) का इस्तेमाल रस निकालने के लिए दाख को पैरों तले लताड़ने के लिए किया जाता था। ठोस चट्टान में से एक या दो फुट गहरे दो हौज़ बनाए जाते थे, जिसमें एक ऊपरी और एक नीचे होता था। यदि ठोस चट्टान न मिले तो हौज़ मिट्टी खोदकर उसके ऊपर पत्थर लगाकर और फिर प्लास्टर से कोट करके बनाए जाते थे। कटनी के समय में जवानों द्वारा दाखों को लताड़ा जाता था। दाखों को ऊपरी हौज़ में लताड़े जाने के बाद रस निचले हौज़ में से निकल आता था। बाद में इसे खमीरा करने के लिए मशकों में डाल दिया जाता था। दाख को लताड़ना आनन्द और जश्न का समय होता था (यशायाह 16:10)।

अन्त में गृहस्वामी ने **गुम्मट बनाया,** जिसमें से पहरेदार बाद में इसे साफ़ सफाई करने वालों और इसके फल को चुराने वालों को दूर रखने के लिए आस-पास के इलाके पर नज़र रख सकता था (2 इतिहास 26:10; श्रेष्ठगीत 2:15)। दाख की बारी में ''गुम्मट'' (*purgos*) आम तौर पर गोलाकार और दस फुट के लगभग ऊंचा होता था। भूतल को पत्थर से बनाया जाता था और इसका इस्तेमाल रहने के कमरों के रूप में किया जाता था। ऊपरी तल टहनियों से बनाया गया था।[4] वहां से चौकीदार पूरे दाख की बारी को देख सकते थे। चौकीदार कटाई के मौसम में लगातार दाख की बारी की रक्षा के लिए तैनात किए जाते थे।

दाख की अपनी बारी के लिए तैयारियां कर लेने के बाद गृहस्वामी **किसानों को उसका ठेका देकर परदेश चला गया**। इन लोगों का ज़िम्मा दाख की बोआई, गुडाई और देखभाल करने का था ताकि उनसे बहुत फल लूि सके। इस काल के दौरान पलिश्तीन में बड़े बड़े खेत होना आम बात थी। ये खेत या तो बड़े बड़ जिम्मीदारों के होते या विदेशियों के होते थे जो उन्हें निर्धन यहूदी किसानें को ठेके पर दे देते थे।[5] इस दृष्टांत में किसान यहूदियों को दिखाया गया है (21:45)।

आयत 34. फल का समय आने पर **गृहस्वामी ने अपने दासों को उसका फल लेने के लिए** किरायेदारों के पास भेजा। यह प्रबन्ध मिलकर काटने जैसा अधिक था।

किसानों को गृहस्वामी को देने की बात श्रेष्ठगीत में मिलती है:

> ''बाल्हामोन में सुलैमान की एक दाख की बारी थी;
> उस ने वह दाख की बारी रखवालों को सौंप दी;
> हर एक रखवाले को उसके फलों के लिए चान्दी के हजार-हजार टुकड़े देने थे''
> (श्रेष्ठगीत 8:11)।

इस मामले में फल बेच दिया गया था और धन राजा के पास ले जाया गया था। रखवालों ने अपने लिए दो सौ शकेल रखने थे (श्रेष्ठगीत 8:12)। अधिकतर लाभ गृहस्वामी को ही मिलना था,

क्योंकि दाख की बारी उसकी थी।

इस दृष्टांत में आदमी के लिए केवल अपनी सम्पत्ति का फल इकट्ठा करना सही था। यदि वह एक समय के अन्दर-अन्दर उपज को इकट्ठी न करता तो उसे दाख की बारी के खोने का खतरा था क्योंकि किसान इसे पाने का जायज दावा कर सकते थे। मिशनाह के अनुसार, यदि कोई तीन या चार सालों तक कटाई के सीज़न तक बिना झगड़े के कब्जा कर ले तो दाख की बारी पर अपने स्वामित्व को पक्का कर सकता था।[6] इस प्रक्रिया को हज़का कहा जाता था। परन्तु किसानों से फल इकट्ठे करके गृहस्वामी ने अपने कब्जे के किसी भी संदेह को दूर कर दिया। टालमुड में कहा गया है, ''यदि [ज़मीन के भाग का दावेदार] [कब्जे वाले व्यक्ति] की अपने कंधों पर फसल की टोकरी उठाने में सहायता करे, तो इससे यह मान्यता बन सकती है [कि ज़मीन उसकी है]।''[7] लियोन मौरिस ने लिखा:

> नई दाख की बारी में चौथे साल तक अधिक फसल नहीं होती थी और पांचवें साल तक अधिक लाभ नहीं होता था। ... स्वामी किराया इकट्ठा करके अपनी स्थिति पक्की कर रहा था, चाहे इन सालों के दौरान जब से दाख की बारी लगाई गई थी, उसने बहुत पैसा खर्च किया।[8]

आयत 35. किसानों ने दाख की बारी का कब्जा लेने के लिए जो कुछ भी वे कर सकते थे किया। उन्होंने गृहस्वामी के **दासों** के साथ दुर्व्यवहार किया। जिन्हें उनके पास उसका फल इकट्ठा करने को भेजा गया था: उन्होंने **किसी को पीटा, और किसी को मार डाला; और किसी पर पथराव किया**। हमारी तरह ही इन किसानों की नृशंसता की बात से यीशु के सुनने वाले क्रोधित हो उठे होंगे। निर्दोष, निहत्थे दूतों की हत्या को गिरी हुई हरकत माना जाता था।[9] इस दृष्टांत वाले दास परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मन फिराव का फल लाने के लिए कहने को भेजे गए पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को दर्शाता है (देखें यशायाह 5:4)। इस्राएलियों ने भविष्यवक्ताओं की सुनने से इनकार कर दिया, यानी उन्होंने उनके साथ बुरा बर्ताव किया और कइयों को तो मार भी डाला।[10]

आयत 36. असाधारण अनुग्रह दिखाते हुए गृहस्वामी ने उन किसानों को निकालने के लिए तुरन्त किसी को नहीं भेजा। इसके विपरीत वह लेने के लिए **जो उसका अधिकार था, उस ने और दासों को** भेजा, जो **पहलों से अधिक थे**। दुष्ट किसानों ने उनके साथ भी **वैसा ही** किया। गृहस्वामी के कामों से ''पीढ़ी दर पीढ़ी परमेश्वर के इस्राएलियों के पास भविष्यवक्ताओं को भेजने में उसकी धीरज से भरी करुणा'' का पता चलता है।[11]

आयत 37. इन दुष्टों को दण्ड देने के बजाय गृहस्वामी ने अपने प्रति उनकी जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए उन्हें एक अन्तिम अवसर देने का निर्णय लिया। यह मानकर कि किसान उसका **आदर** करेंगे और उसे कुछ हानि नहीं पहुंचाएंगे, गृहस्वामी ने अपने **पुत्र** को भेज दिया। मरकुस उसे ''प्रिय पुत्र'' कहता है (मरकुस 12:6)। आयत 38 में किसानों ने उसे ''वारिस'' कहा। यह पुत्र यीशु को दर्शाता है जो परमेश्वर का ''प्रिय पुत्र'' है (3:17; 17:5)। इस दृष्टांत की कई मुख्य अवधारणाएं इब्रानियों की पुस्तक की आरम्भिक आयतों में इकट्ठी की गई हैं:

> कालांतर में *परमेश्वर* ने हमारे *पूर्वजों* से कई बार और अलग-अलग तरह से *भविष्यवक्ताओं* के द्वारा बातें कीं, परन्तु इन अन्तिम दिनों में उसने हमारे साथ *अपने पुत्र* के द्वारा बातें की हैं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का *वारिस* ठहराया और उसी के द्वारा उसने संसार को बनाया (इब्रानियों 1:1, 2; NIV)।

आयत 38. जब किसानों ने गृहस्वामी के पुत्र को देखा तो उन्होंने पहचान लिया कि वह दाख की बारी का **वारिस** है। उन्होंने उसे **मारकर उसकी मिरास** ले लेने के लिए षड्यन्त्र रचा। कइयों ने सुझाव दिया है कि "वारिस" के रूप में उनका इसे पहचानना यह अर्थ देता है कि उन्हें लगा कि उसका पिता मर चुका है या उसके पिता ने दाख की बारी उसके नाम कर दी है। जो भी हो उन्होंने पुत्र को दाख की बारी के अपने स्वामित्व में रुकावट माना और उसे नष्ट कर देने का निर्णय लिया (देखें 1 राजाओं 21)।

इसी प्रकार से यहूदी अगुओं ने यीशु को लोगों के ऊपर नेतृत्व की अपनी स्थिति के लिए खतरे के रूप में देखा। यूहन्ना 11:47-53 में उन्होंने तर्क दिया कि यदि वे यीशु को चिह्न दिखाते रहने की अनुमति देते हैं तो अधिक से अधिक लोग उसमें विश्वास करते जाएंगे। मसीहा के रूप में यीशु की प्रतिष्ठा ने रोमी आक्रमण को न्यौता देना था जो उनके देश के पतन का कारण बन जाता। उन्हें यह अधिक आसान लगा कि एक आदमी पूरी जाति के दुख उठाने के लिए मरे। वे लोगों पर अपनी सत्ता को खोने का जोखिम नहीं उठा सके, इस कारण उन्होंने उसे मार डालने की चाल चली।

आयत 39. किसानों ने गृहस्वामी के पुत्र को पकड़कर **दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला**। मरकुस 12:8 इस क्रम को उलटा लिखता है कि उन्होंने पुत्र को मार डाला और फिर दाख की बारी में से बाहर फैंक दिया। मत्ती का क्रम सम्भवतया यीशु द्वारा मूल में बताए दृष्टांत के ढंग को दिखाता है।[12] घटनाओं की इस कड़ी के लिए कम से कम दो सम्भव व्याख्याएं पाई जाती हैं। पहले तो यह कि पुत्र को मार डालने से पहले दाख की बारी में से निकालने की बात साफ सफाई के प्रति चिंता को दिखा सकती है। मौरिस ने सुझाव दिया है कि यदि किसानों ने पुत्र का लहू दाख की बारी में बहाया होता तो पूरा बाग अशुद्ध हो जाता। जिस कारण इसका फल भी अशुद्ध हो जाता और उसे बेचना कठिन हो जाता।[13] दूसरा विचार यह है कि यह कड़ी यीशु के उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले यरूशलेम से बाहर ले जाने को दिखाती है (यूहन्ना 19:17, 20); उसने "फाटक के बाहर दुख उठाया" (इब्रानियों 13:12)।

मसीह ने स्पष्ट रूप में अपने चेलों पर प्रगट कर दिया कि वह शीघ्र ही मरने वाला है (16:21; 17:22, 23; 20:18, 19)। इस अवसर पर उसने यही सच्चाई अपने शत्रुओं को बता दी; परन्तु उसकी आने वाली मृत्यु का समाचार एक दृष्टांत में छुपा दिया गया।

आयतें 40, 41. दृष्टांत के अन्त में यीशु ने यहूदी अगुओं से पूछा कि उनके विचार से **स्वामी** अपने पुत्र की हत्या करने पर किसानों का क्या हाल करेगा। अगुओं ने उत्तर दिया, "**वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नष्ट करेगा; और दाख की बारी का ठेका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।**" किसानों के अन्याय पर अगुओं का क्रोध आयत में दोहराए जाने वाली बात से स्पष्ट होता है: "बुरे लोगों ... बुरी रीति से नष्ट" (*kakous*

kakōs)। अजीब बात है कि कहानी वाले किसानों ने इस सम्भावना पर विचार ही नहीं किया कि स्वामी आकर उनसे वैसा ही बदला ले लेगा। रोमी परम्परा के अनुसार जब किसी स्वामी की हत्या किसी दास के द्वारा होती है तो उसके सभी दासों को मृत्यु दण्ड दिया जाता था।[14] किसानों को गृहस्वामी के पुत्र की हत्या के षड्यन्त्र पर इससे कम की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

एक बार फिर यहूदी अगुओं ने अपने उत्तर के अर्थ को समझे बिना सही उत्तर दे दिया (21:31; देखें 2 शमूएल 12:5–7)। यह समझे बिना कि वह दृष्टांत किस प्रकार से उनके लिए था, उन्होंने परमेश्वर के लोगों पर अधिकार के पदों में होने की अपनी अयोग्यता को दिखा दिया। उन्होंने परमेश्वर के स्वामित्व और अपने राज्य पर उसके अधिकार को बदल देने की कोशिश भी की। उन्होंने उसके भविष्यवक्ताओं को मार डाला था और अन्त में उन्होंने उसके पुत्र को मार डालना था। तौभी परमेश्वर ने उन्हें उनके विद्रोह और हिंसा का बदला देना था। यह न्याय लगभग चालीस साल बाद यरूशलेम के विनाश और 70 ई. में मन्दिर के विनाश के साथ आया।

आयत 42. प्रभु ने यह पूछते हुए कि **''क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा?''** दृष्टांत की प्रासंगिकता बनाने लगा। वह आम तौर पर ऐसी भाषा का इस्तेमाल करता था, जो रब्बियों की बहसों और चर्चाओं में आम थी (12:3, 5; 19:4; 21:16; 22:31)। इस प्रश्न से वे अवश्य परेशान हुए होंगे, क्योंकि उसने रस्मी तौर पर उनकी पाठशालाओं में पढ़ाई नहीं की थी।

यीशु ने भजन संहिता 118:22, 23 से उद्धृत करना जारी रखा:

''राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था
वही कोने का सिरा हो गया है।
यह तो यहोवा की ओर से हुआ है,
यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।''

उसके कहने का अर्थ स्पष्ट था। ''कोने का सिरा'' स्वयं यीशु था, परन्तु यहूदी अगुओं ने उसे नकार दिया था। उनकी ओर से नकारे जाने के बावजूद उस ने परमेश्वर के नये भवन में ''कोने का सिरा'' बन जाना था।

मत्ती के यूनानी धर्मशास्त्र में पुराने नियम के इस हवाले के शब्दों को सप्तत्ति अनुवाद से वैसा का वैसा दोहराया गया है। आरम्भिक कलीसिया में स्पष्ट रूप में यह एक महत्वपूर्ण आयत थी। यह न केवल सुसमाचार के विवरणों में (21:42; मरकुस 12:10, 11; लूका 20:17) बल्कि प्रेरितों 4:11 और 1 पतरस 2:7 में भी मिलती है। इस अध्याय में यहां पर भजन संहिता 118 को दूसरी बार उद्धृत किया गया है (21:9 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 43. यीशु ने यहूदी अगुओं को बताया कि उन्होंने चालाकी से काम किया था। इस कारण **परमेश्वर का राज्य** उनसे ले लिया जाना था। फिर इसे **ऐसी जाति को** दे दिया जाना था, **जो उसका फल** लाती। विडम्बना यह है कि उसका निर्णय उनके अनुमान से मेल खाता था (21:41)। यह नई ''जाति'' उन सब लोगों को कहा गया है, जिन्होंने चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति, प्रभु के अनुग्रहकारी निमन्त्रण को दीनता से स्वीकार करना था (1 पतरस 2:9, 10)।

आयत 44. कुछ प्राचीन हस्तलेखों में यह आयत नहीं मिलती, जिस कारण एक शास्त्री

द्वारा सम्भवतया लूका 20:18 से लिया गया। परन्तु एक जैसी होने के बावजूद यूनानी भाषा में यें आयतें एक समान नहीं हैं। इसके अलावा आयत 43 के अन्त (*autēs*) से आयत 44 के अन्त (*auton*) तक शास्त्री की नज़र से छलांग लगाकर चूक को देखा जा सकता है।[15]

पत्थर का रूपक आयत 42 से जारी रहता है। आम तौर पर **जो इस पत्थर पर गिरेगा** सम्भवतया विश्वास और आज्ञापालन में मसीह के पास आने वाले के लिए कहा गया है। उसके मन फिराव के लिए उसका **चकनाचूर हो** जाना आवश्यक है। तौभी उसे मसीह के द्वारा सुधार कर चंगा किया जाएगा। इसके विपरीत "जिस पर यह पत्थर **गिरेगा,** उसे यह **पीस** डालेगा।" इस व्यक्ति को न्याय का सामना करना पड़ेगा। यीशु के सुनने वालों के लिए इस कहावत की विशेष प्रासंगिकता थी, क्योंकि मसीह को नकारने वाले यहूदियों को रोमी सेनापति टाइटस द्वारा 70 ई. में यरूशलेम को कुचले जाने और यहूदी प्रबन्ध का अन्त कर देने पर अपनी हार का सामना करना पड़ा।

आयतें 45, 46. यहूदी अगुओं को चाहे इन **दृष्टांतों** के अर्थ पूरी तरह से समझ नहीं आए थे, परन्तु उन्हें यह समझ आ गया था कि यीशु सीधे-सीधे उन्हें सबक दे रहा है। उन्होंने पहले ही यह ठान लिया था कि वे उसे मार डालेंगे, परन्तु उस समय **लोगों से डर गए**। यीशु के शत्रुओं ने उसके विजयी प्रवेश को देखा था और उन्होंने देखा था कि कितने लोग उसे **भविष्यवक्ता** मानते थे। लोगों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह ही यीशु का बड़ा सम्मान था (21:26)।

राजा के पुत्र के विवाह का दृष्टांत (22:1-14)

[1]यीशु फिर उनसे दृष्टांतों में कहने लगा। [2]"स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने पुत्र का विवाह किया। [3]और उस ने अपने दासों को भेजा कि निमन्त्रित लोगों को विवाह के भोज में बुलाए; परन्तु उन्होंने आना न चाहा। [4]फिर उस ने और दासों को यह कहकर भेजा, 'निमन्त्रित लोगों से कहो: देखो, मैं भोज तैयार कर चुका हूं, मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं: और सब कुछ तैयार है; विवाह के भोज में आओ।' [5]परन्तु वे उपेक्षा करके चल दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को। [6]अन्य लोगों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकड़कर उन का अनादर किया और मार डाला। [7]तब राजा को क्रोध आया, और अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उन के नगर को फूंक दिया। [8]तब उसने अपने दासों से कहा, 'विवाह का भोज तो तैयार है, परन्तु निमन्त्रित लोग योग्य नहीं ठहरे। [9]इसलिए चौराहों पर जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें सबको विवाह के भोज में बुला लाओ।' [10]अत: उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठे किया; और विवाह का घर अतिथियों से भर गया।

[11]जब राजा अतिथियों को देखने भीतर आया, तो उसने वहां एक मनुष्य देखा, जो ब्याह का वस्त्र नहीं पहिने था। [12]उस ने उस से पूछा, 'हे मित्र; तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्यों आ गया?' उसका मुंह बन्द हो गया। [13]तब राजा ने सेवकों से कहा, इसके हाथ पांव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहां रोना, और दांत पीसना होगा। [14]क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।"

राजा के पुत्र के विवाह का दृष्टांत यीशु द्वारा यहूदी अगुओं को दिए गए उत्तर में तीसरा दृष्टांत है (21:28–32, 33–46; 22:1–14)।[16] यह राज्य का दृष्टांत है और इसे यीशु द्वारा मुख्यतया धार्मिक अगुओं को दोषी ठहराने के लिए दिया गया था। ये लोग उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे जो प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा के रूप में उसे स्वीकार करने से इनकार करते रहे। उनके ठुकराने के कारण परमेश्वर ने उन लोगों पर जो किसी समय उसकी चुनी हुई प्रजा थे कठोर दण्ड लाना था। उन्हें बाहर निकाल दिया जाना था और दूसरों को जिन्हें वे अयोग्य मानते थे (सामरियों और अन्यजातियों को) सम्मान के साथ परमेश्वर के राज्य में आने का निमन्त्रण दिया जाना था।

आयत 1. अध्याय 21 समाप्त होने पर प्रधान याजकों और फरीसियों को यह समझ आने लगा था कि यीशु द्वारा दिए पहले दो दृष्टांत सीधे उन्हीं पर निशाना थे। इससे उसके प्रति उनकी शत्रुता बढ़ गई। वे उसे उसी समय पकड़ना चाहते थे, परन्तु उस समय लोगों के डर ने उन्हें ऐसा करने से रोके रखा (21:45, 46)। **यीशु** के प्रति दिखाए गए यहूदियों के किसी भी विरोध के बावजूद आयत 1 दिखाती है कि उसने तीसरे दृष्टांत के साथ दिखाना जारी रखा: वह **फिर उनसे दृष्टांतों में बातें करने लगा**। ''दृष्टांतों'' शब्द बहुवचन में है। ऐसा क्यों? (1) इसका अर्थ यीशु द्वारा इस एक अवसर पर तीन दृष्टांत कहना हो सकता है (21:28–22:14)। (2) हो सकता है कि इसलिए कि इस तीसरे दृष्टांत के दो भाग हैं (22:1–10, 11–14)। (3) यीशु द्वारा इस समय में और दृष्टांत बताए हो सकते हैं, जिन्हें लिखा नहीं गया।

आयत 2. यीशु आम तौर पर अपने दृष्टांत का आरम्भ **''स्वर्ग का राज्य ... के समान है''** कहते हुए करता था (13:24, 31, 33, 44, 45, 47; 18:23; 20:1; 25:1)। यहां राज्य को **उस राजा** से मिलाया गया है, **जिसने अपने पुत्र का विवाह किया**। राजा परमेश्वर को दर्शाता है (देखें 5:35; 18:23; 21:28, 33), जबकि राजा का पुत्र यीशु है जो परमेश्वर का पुत्र है (देखें 21:37)। नये नियम का पवित्र शास्त्र यीशु को आम तौर पर दूल्हे के रूप में दिखाता है (9:15; 25:1; यूहन्ना 3:29; इफिसियों 5:27; प्रकाशितवाक्य 21:2, 9)। दुल्हन का उल्लेख चाहे नहीं है पर निश्चित रूप से वह परमेश्वर का राज्य अर्थात मसीह की कलीसिया है (इफिसियों 5:22–33)।

प्राचीन जगत के राजाओं और अन्य महत्वपूर्ण अगुओं के लिए एक हज़ार से अधिक अतिथियों को बुलाकर अपने पुत्रों के विवाह के बड़े-बड़े भोज देना आम बात थी।[17] रॉबर्ट एच. माउंस ने लिखा, ''आने वाले जीवन की आशिषों को दिखाने के लिए प्राचीन साहित्य में विवाह के भोज का रूपक व्यापक रूप में इस्तेमाल किया जाता था (उदाहरण के लिए, यशायाह 25:6 से)। यह इस बात का सुझाव देता है कि इस दृष्टांत की व्याख्या युगांत-विज्ञान को ध्यान में रखकर की जाए।'' मत्ती और प्रकाशितवाक्य में बाद में विवाह के भोज का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य और समय के अन्त के वर्णन के लिए किया गया है (25:10; प्रकाशिवाक्य 19:7–9)।

आयत 3. राजा के **दासों** की व्याख्या यहूदियों को मन फिराने की या उनके ऊपर आने वाले न्याय को भुगतने की चेतावनी देने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजे गए भविष्यवक्ताओं के द्वारा की जा सकती है (देखें 21:34)। जब दासों ने **निमन्त्रित लोगों को** भोज पर बुलाया तो **उन्होंने आना न चाहा**।

अधिकतर समाजों में विवाह आनन्द और जश्न का मौका होता है, परन्तु यहूदियों में विशेष

रूप में यह ऐसा ही था। ऐसे अवसर पर किसी को निमन्त्रण देना बड़े सम्मान की बात होती थी और उस निमन्त्रण को ठुकराना बड़े अपमान की। बुलाए हुए अतिथियों को उस अवसर की तैयारी के लिए काफ़ी समय दिया जाता था और किसी भी सम्भावित रुकावट को दूर करते हुए उनसे आने की उम्मीद की जाती थी। किसी की विवाह की दावत को ठुकराना किसी के लिए आम व्यक्ति का अपमान था इस कारण राजा के निमन्त्रण को ठुकराने की भयावयता की कल्पना की गई। दृष्टांत वाला भोज एक शाही अवसर होगा जिसमें धनवान और प्रभावशाली लोग इकट्ठा हुए होंगे।

यहूदियों के विवाहों की रस्में आज की रस्मों से बहुत अलग होती थीं। लड़के-लड़की की पहले मंगनी होती थी जो आम तौर पर दूल्हे और दुल्हन के माता-पिता के बीच हुए समझौते का परिणाम होती थी। सगाई के बाद मंगनी होती थी, जो कुछ महीनों से लेकर पूरा साल तक रहती थी। यह एक पक्का अनुबंध होता था जिसे केवल तलाक के द्वारा तोड़ा जा सकता था। सगाई का ऐसा विचार मरियम और यूसुफ के सम्बन्ध में देखा जाता है। उनमें कोई शारीरिक सम्बन्ध न होने के बावजूद मरियम को पहले ही यूसुफ की पत्नी मान लिया गया था (1:18-21)। यदि विवाह से पहले लड़की के मंगेतर की मृत्यु हो जाती तो उसे विधवा माना जाता था। विवाह और मंगनी के बाद दिए जाने वाले भोज के लिए निमन्त्रण बहुत पहले भेज दिए जाते थे। पहले औपचारिक निमन्त्रण आम तौर पर मंगनी के समय में भेजे जाते थे। फिर उनके बीच लम्बी अवधि के कारण, विवाह के समय दूसरा निमन्त्रण भेजा जाता था। समय की अदला-बदली के लिए दूसरे निमन्त्रण में यह सुधार कर लिया जाता कि समय से पहले सही-सही समय तय करना कठिन था कि तैयारी कब पूरी होगी (लूका 14:16, 17)।[19]

आमन्त्रित अतिथियों को बताने के लिए कि विवाह का समय निकट आ रहा है गलियों में एक घोषक को भेजा जाता था। यदि वे तैयार होकर उपयुक्त वस्त्र न पहनते तो उन्हें विवाह के जश्न में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती। घोषक को भेजने के तुरन्त बाद दूल्हा, दुल्हन और बुलाए हुए अतिथियों के साथ चलते-चलते बारात को गलियों में से ले जाता। विवाह का स्थान आम तौर पर वह घर होता था, जिसमें विवाहित दम्पत्ति ने रहना होता था। बारात और बुलाए हुए अतिथियों के अन्दर आ जाने पर दरवाज़े बन्द कर दिए जाते थे। फिर देरी से आने वाले बुलाए हुए अतिथियों को भी अन्दर आने की अनुमति नहीं होती थी (25:1-13)।

आयत 4. वृत्तांत में मेजबान ने ऐसे काम किया, जो राजा के स्वभाव से मेल नहीं खाता। बुलाए हुए लोगों द्वारा पहले ठुकराए जाने पर राजा ने अतिथियों से **विवाह के भोज** में भाग लेने की विनती करने के लिए और दासों को भेजकर धीरज दिखाया (देखें 21:36)। उन्हें यह संदेश आगे देना था कि **सब कुछ तैयार है,** जिसमें **बैल** और **पाले हुए पशु** काटकर तैयार किए गए हैं (देखें लूका 15:23, 27, 30)।

पहले बुलाए गए अतिथि यहूदी ही थे जिन्होंने बार-बार परमेश्वर के निमन्त्रण को ठुकरा दिया था और अपने लिए मन फिराने की उसकी पेशकश को नकारा था। उन्हें पहला निमन्त्रण सीनै पर्वत पर व्यवस्था देकर दिया गया था। जब उन्होंने इसे ठुकरा दिया तो परमेश्वर ने उन्हें अपने पास वापस बुलाने के लिए बार-बार नबियों को भेजा। परन्तु उन्होंने नबियों को मार डाला (21:35, 36; 23:29-35)। अपने इकलौते पुत्र को भेजकर उसने उन्हें एक अन्तिम अवसर

दिया (21:37-39)।

आयत 5. दूसरा निमन्त्रण भी ठुकरा दिया गया था, क्योंकि वे **उसकी उपेक्षा करके चल दिए,** के कुछ अनुवादों में कहा गया है कि ''उन्होंने इसे हल्के से लिया'' (KJV; NKJV; ASV; RSV; NRSV)। क्रिया शब्द *ameleō* का अर्थ है किसी व्यक्ति या वस्तु को ''नज़रअन्दाज़,'' ''अपमान,'' या ''बेपरवाही करना।'' भोज में भाग लेने के बजाय वे **चल दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को**। यहां किसान और व्यापारी का इस्तेमाल उस रूप में कई लोगों को दर्शाने के लिए किया गया है। दोनों व्यवसायों में अपने आप में कोई भी बुराई नहीं थी। ये उदाहरण केवल यह दिखाते हैं कि भौतिक संसार से भरे होना बहुत से लोगों को किस प्रकार परमेश्वर के निमन्त्रण को स्वीकार करने से रोक सकता है।

लूका में दावत के लिए बुलाए हुए लोगों के न आने के बहाने बनाने का ऐसा ही एक दृष्टांत है। किसी को हाल ही में खरीदी हुई भूमि को देखने जाना था। किसी ने पांच बैलों की जोड़ियां खरीदनी थी और उन्हें टैस्ट करना था। किसी ने अभी-अभी शादी की थी और वह अपनी पत्नी के साथ समय बिताना चाहता था (लूका 14:18-20)। इस दृष्टांत में ऐसा कोई बहाना नहीं मिलता।

आयत 6. अन्य लोगों अर्थात जो अपने खेत या कारोबार में नहीं गए, **उसके दासों को पकड़कर उनका अनादर किया और मार डाला** (देखें 21:35, 36)। स्पष्टतया किसी भी समाज में प्रेमपूर्वक निमन्त्रण लाने वाले लोगों के साथ दुर्व्यवहार किए जाने को स्वीकार नहीं किया जाएगा चाहे उस निमन्त्रण को स्वीकार न ही करना हो। राजा या किसी अन्य प्रमुख नेता के दूतों के साथ दुर्व्यवहार करना बहुत भारी पड़ना था।[20] ऐसा करके व्यक्ति ने अपनी ही जान जोखिम में डालनी थी।

आयत 7. अपने दासों की मृत्यु की बात सुनकर **राजा** इतना क्रोधित हुआ कि उसने **अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उन के नगर को फूंक दिया**। अपनी सेना की टुकड़ियों द्वारा राजा ने उसके सम्मान का अनादर करने और उसके बेकसूर दूतों को मार डालने वालों को भी मार डाला। प्राचीन समयों में नगरों को जला देना सेना के लिए आम बात होती थी, शायद यह पूर्ण विनाश का संकेत था।[21]

इस आयत की व्याख्या अन्याय पर परमेश्वर के क्रोध की पुष्टि करती है, ऐसा विषय जो दृष्टांतों में और कहीं मिलता है (18:34; 21:40, 41)। चाहे वह अत्यधिक धीरज करने वाला है, परन्तु उसके धीरज की एक सीमा है। एक समय आएगा जब वह सचमुच में दुष्ट लोगों को दण्ड देगा।

यह व्याख्या भविष्यवाणी वाली भी है, इस बात में कि इसमें यरूशलेम के विनाश की पूर्व सूचना थी जो 70 ई. में होने वाला था।[22] 24:1, 2, 15 में यीशु ने भी इस घटना की भविष्यवाणी की। यहूदियों ने जब राज्य में आने की परमेश्वर की अन्तिम पेशकश को ठुकरा दिया तो उसने उन्हें ठुकराकर उनके ऊपर विनाश लाने के लिए रोमी सेनापति टाइटस को खड़ा किया। 70 ई. में यरूशलेम के विनाश के साथ ही मन्दिर की आराधना और बलिदानों का दिया जाना बन्द हो गया। मसीह की मृत्यु और नई वाचा के द्वारा ये बातें पहले ही बन्द हो चुकी थीं (लगभग 30 ई.),परन्तु परमेश्वर ने उसे चालीस साल तक और चलने दिया। अन्त में उनके अलोप हो जाने पर (देखें

इब्रानियों 8:13) यह और स्पष्ट हो गया कि इस्राएल अब परमेश्वर के चुने हुए लोग नहीं रहे थे।

आयतें 8, 9. राजा ने घोषणा की कि उसके निमन्त्रण को ठुकराने वाले लोग **योग्य नहीं ठहरे**। यह विडम्बना की बात ही है क्योंकि उसे विवाह में पहले "भले" माने जाने वाले लोगों को बुलाना चाहिए था। दिलचस्प बात यह है कि "योग्य" (*axios*) शब्द पिसिदिया के अन्ताकिया में वचन को न मानने वाले यहूदियों को पौलुस के उत्तर में भी मिलता है: "अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता: परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के *योग्य* नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं" (प्रेरितों 13:46)।

यहां पर राजा ने अन्य लोगों को **विवाह** के भोज में बुलाने के लिए **दासों** के तीसरे समूह को भेजा। इस बार उसने उनसे कहा, "**इसलिए चौराहों पर जाओ।**" अनुवादित शब्द "चौराहों" (*diexodous tōn hodōn*) को पहचानना कठिन है। इसका अनुवाद अलग-अलग रूप में "मुख्य बाजारों" (TEV), "बाजारों के कोनों" (NCV) और "मुख्य चौराहों" (NJB) में हुआ है। परन्तु इसका संकेत मिलता है "वह स्थान जहां मुख्य सड़क नगर (में से) निकलती है और खुले देहात में (बाहर) जाती है।"[23] रॉबर्ट एच. गुंडरी का मानना था कि केवल यही वह स्थान था, जहां लोग मिलने थे क्योंकि "नगर का नाश हो चुका है" (22:7)।[24]

आयत 10. इन **दासों** से कहा गया कि क्या **बुरे** क्या **भले** वे जिसे भी देखें उसे भोज में आने को कहें। पहले बुलाए गए लोगों के विपरीत ये लोग आम लोग ही होंगे। उन्होंने राजा के निमन्त्रण का स्वागत किया और **विवाह का घर अतिथियों से भर गया** (देखें 8:11, 12; 21:41)। यहूदियों द्वारा मसीह को ठुकराए जाने के बाद उसने प्रेरितों को यह संदेश देकर संसार में भेजा कि स्वर्ग का राज्य सब जातियों, वर्गों और देशों के लोगों के लिए खुला है (28:18-20; मरकुस 16:15, 16)।

आयत 11. जब **राजा अतिथियों को देखने** आया तो उसे **एक मनुष्य** मिला जिसने **ब्याह का वस्त्र** नहीं पहना हुआ था। हो सकता है कि यह विवाह के इस भोज के लिए राजा द्वारा दिए गए विशेष कपड़े हों। विशेष अवसरों के लिए राजाओं द्वारा शाही वस्त्र दिए जाने के कुछ प्रमाण मिलते हैं (2 राजाओं 10:22)।[25] आने वाले लोग गरीब थे, जिस कारण हो सकता है कि राजा ने उनके लिए विवाह के वस्त्र उपलब्ध करवाए हों। इस मामले में यहां पर वस्त्र मसीह के द्वारा परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई धार्मिकता है (रोमियों 3:21-26; गलातियों 3:26-29)।

एक और सम्भावना यह है कि विवाह के वस्त्र अतिथि द्वारा पहने जाने वाले सफेद कपड़ों का साफ-सुथरा सैट हो सकता है। यदि ऐसा है तो विवाह के वस्त्र धर्मी जीवन का प्रतीक हो सकते हैं, जिसकी उम्मीद राज्य के लोगों से की जाती है।[26] ऐसे ही एक रूपक में मसीह की दुल्हन द्वारा पहनी जाने वाली महीन मलमल (चमकीली और शुद्ध) "पवित्र लोगों के धर्म के काम" है (प्रकाशितवाक्य 19:8)। यह व्याख्या पिछले दृष्टांत से मेल खाती है जहां दाख की बारी दूसरे लोगों को दी जाती है, जो अच्छा फल लाएंगे (21:41, 43; देखें 5:20)।[27]

आयत 12. राजा ने इस अतिथि को "**हे मित्र**" कहा (20:13 पर टिप्पणियां देखें)। उसने उससे पूछा, "**तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्यों आ गया?**" राजा पूछ रहा हो सकता है, "इस प्रकार वस्त्र पहने हुए तुझे द्वारपालों ने भीतर कैसे आने दिया?" तौभी यह प्रश्न जानकारी

देने की विनती से बढ़कर आरोप लगाने वाला अधिक लगता है। ''क्यों'' के लिए यूनानी भाषा में शब्द (*pōs*) सवालों में है जो अस्वीकृति या ठुकराए जाने का संकेत है। इसका अनुवाद ''तुझे हिम्मत कैसे हुई?'' या ''किस अधिकार से?'' हो सकता है। इस विशेष प्रश्न का अनुवाद ''विवाह के वस्त्रों के बिना यहां आने की तुझे हिम्मत कैसे हो गई?'' हो सकता है।[28] **उस आदमी** ने राजा को बड़ा दुख पहुंचाया था जिस कारण उसे कोई जवाब ही नहीं आया। **मुंह बन्द हो गया** के लिए यूनानी शब्द (*phimoō*) का अक्षरश: अनुवाद ''मुसका लग गया'' हो सकता है। यहां इसका इस्तेमाल ''खामोश'' होने के लिए प्रतीकात्मक अर्थ में किया गया है।

विवाह के वस्त्र के बिना आने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसने ''सुसमाचार के निमन्त्रण को तो स्वीकार कर लिया, परन्तु सुसमाचार के अनुसार अपने जीवन को ढालने से इनकार किया।''[29] कुछ लोग जो यीशु के चेले होने का दावा करते हैं उसके द्वितीय आगमन के समय न्याय के लिए तैयार नहीं होंगे (7:21-23; 24:45-51; 25:41-46)।

आयत 13. राजा ने अपने **सेवकों** से तैयारी के बिना आने वाले अतिथि को **बांधकर उसे बाहर अंधियारे में डाल** देने को कहा, जहां **रोना, और दांत पीसना** होना था। यह भाषा उस अनन्त दण्ड की उदासी और दुख को दिखाती है (8:12 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 14. यीशु ने यह कहते हुए दृष्टांत को समाप्त किया, **''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।''** ''बहुत'' का इस्तेमाल यहां ''सब'' के अर्थ वाली अभिव्यक्ति के रूप में हो सकता है (20:28 पर टिप्पणियां देखें)। ''बुलाए हुए'' के लिए यूनानी क्रिया विशेषण (*klētos*) का सम्बन्ध ''आमन्त्रित'' के लिए क्रिया शब्द (*kaleō*) से है जो पूरे दृष्टांत में मिलता है (22:3, 4, 8, 9)। आदर्श रूप में सुसमाचार का निमन्त्रण सबके लिए है और यह विश्वव्यापी है (28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:47)। परन्तु हर किसी को इसे सुनने का अवसर शायद न मिले (रोमियों 10:14, 15)।

चाहे बहुत से लोगों को बुलाया गया है पर निमन्त्रण को स्वीकार करने वाले थोड़े से लोग हैं। मौरिस ने सावधान किया, ''परमेश्वर की बुलाहट को सुनने वालों और उसके अनुग्रह को जानने वालों को चाहिए कि यह न सोचें कि कोई और बुलाहट भी वैसी ही है और उसका वैसे ही उत्तर देना आवश्यक है।''[30] जो लोग परमेश्वर की बुलाहट को मानने वाले हैं वे ''चुने हुए'' (*ekletos*) हैं (24:22, 24, 31); क्योंकि अन्त में उन्हें उद्धार दिया जाएगा। यीशु को ठुकराने वाले सब लोग नष्ट होंगे।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

दो पुत्रों का दृष्टांत (21:28-32)

यीशु के कहने का अर्थ अपने चेलों को काम करने वाले बनाना था। हमें परमेश्वर की दाख की बारी में काम करने के लिए बुलाया जाता है। भण्डारियों के रूप में तीन शब्द हमारे स्वभाव को दिखाने वाले होने चाहिए।

''उपलब्ध।'' हमारी सबसे बड़ी योग्यता उपलब्ध होना है। आराधना और बाइबल अध्ययन आवश्यक हैं।

''संवेदनशील।'' हमें आपने आस-पास के लोगों के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है। कई बार हमें ''छोटे से छोटे'' के साथ लगाव दिखाने के लिए याद दिलाया जाना आवश्यक है (25:40, 43)।

''जवाबदेह।'' डेनियल वैबस्टर ने लिखा है, ''मेरे मन में रहने वाले सबसे महत्वपूर्ण विचार परमेश्वर के प्रति मेरी व्यक्तिगत जिम्मेदारी है।''[31] हम में से हर कोई परमेश्वर को जवाबदेह है।

राज्य में आप कहां है? क्या आप उपलब्ध, संवेदनशील और जवाबदेह हैं?

''भोज में आओ'' (22:4)

राजा ने अपने तैयार भोजन पर अतिथियों को बुलाने के लिए अपने दासों को भेजा। उसने कहा, ''सब कुछ तैयार है; विवाह के भोज में आओ'' (22:4)। इसी प्रकार से एक पुराने भजन में आग्रह किया गया है, ''सब कुछ तैयार है, भोज में आओ।''[32] स्वर्गीय तैयारियां स्वयं यीशु द्वारा की गई हैं (यूहन्ना 14:1-3)। हमें उसके निमन्त्रण को स्वीकार करके अपने मनों को स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए तैयार करना आवश्यक है। कहते हैं कि ''स्वर्ग तैयार लोगों के लिए एक तैयार जगह है।''[33] लौदीकिया के लोगों से यीशु ने कहा था, ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ'' (प्रकाशितवाक्य 3:20)।

टिप्पणियां

[1]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 507. [2]इन आयतों में वचन से सम्बन्धित समस्याओं के लिए, देखें ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क.(स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 44-46. [3]मत्ती स्वयं इन चुंगी लेने वालों में से एक था, परन्तु यीशु के पीछे चलने के लिए उसने सब कुछ छोड़ दिया था (9:9)। [4]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन, 2002), 133 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [5]वही, 132. [6]मिशनाह *बाबा बथरा* 3.1. [7]टालमुड *बाबा बथरा* 35बी। [8]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 540-41. [9]कीनर, 512. [10]देखें 1 राजाओं 18:4; 2 इतिहास 24:20, 21; नहेम्याह 9:26; यिर्मयाह 7:25, 26; 20:1, 2; 25:4; 26:21-23; मत्ती 23:37; लूका 13:34; इब्रानियों 11:32-38.

[11]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14-28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 620-21. [12]लूका 20:15 मत्ती 21:39 से मेल खाता है। कुछ प्राचीन हस्तलेखों में मरकुस की शृंखला में मेल खाते हुए मत्ती में क्रम को उलटा किया गया है। (मैज़गर, 47.) [13]मौरिस, 542. [14]टेसिटुस *ऐनल्स* 14.42. [15]मैज़गर, 47. [16]ऐसा ही, परन्तु अलग दृष्टांत लूका 14:15-24 में मिलता है। यीशु ने एक प्रसिद्ध फरीसी के घर खाना खाते हुए वह कहानी बताई (लूका 14:1)। बाद के रब्बियों के इतिहास में भी इससे मेल खाता एक दृष्टांत मिलता है। (टालमुड *शब्बथ* 153ए।) [17]डायोडोरस ऑफ़ सिसली 16.91.4-92.1; प्लायनी *लैटर्स* 10.116. [18]रॉबर्ट एस. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 205. [19]पेपायरी उच्च और निम्न दोनों वर्गों में दोहरे निमन्त्रणों की प्रथा की साक्षी देते हैं। (कीनर, 519.) रब्बियों के साहित्य में कुछ लोग दावत में तब तक भाग नहीं लेते थे जब तक उन्हें यह पक्का करने के लिए कि उन्हें बुलाने में कोई गलती नहीं हुई है दो बार निमन्त्रण न दे। (*लेमैंटेशंस रब्बाह* 4.2.)। एस्तेर ने राजा और हामान को भोज पर बुलाया और शाही अधिकारी

आकर अगले दिन तैयारियां हो जाने पर हामान को ले गए (एस्तेर 5:8; 6:14)। [20]ऐसा नहीं है कि ऐसे दूतों के साथ कभी दुर्व्यवहार नहीं हुआ हो। जोसेफस ने लिखा है कि इस्राएलियों ने हिजकिय्याह राजा के दूतों पर ठट्ठा करते हुए हंसने और मूर्खों की तरह उनका मजाक उड़ाते हुए खिल्ली उड़ाई। (जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 9.13.2.)

[21]यहोशू 6:24; 8:28; 11:11, 13; 1 शमूएल 30:1; 1 राजाओं 9:16; 2 राजाओं 25:9; 2 इतिहास 36:19; नहेम्याह 1:3; 2:17; 4:2; भजन संहिता 74:7, 8; यशायाह 1:7; 64:11; यिर्मयाह 38:23; 39:8; 46:19; 52:13; आमोस 1:7, 10, 12. [22]टाइटस द्वारा यरूशलेम और मन्दिर के विनाश के इतिहास के लिए देखें जोसेफस *वार्स* 5; 6. [23]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. एवं संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 244. AB में है "उनके नगर छोड़कर जाने के स्थान पर आम रास्ते।" [24]रॉबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंटरी ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 438. [25]टालमुड *शब्बथ* 152बी। [26]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 302–3. [27]वस्त्र पहनने का अतिरिक्त रूपक प्रकाशितवाक्य में मिलता है। पवित्र लोगों ने "अपने अपने वस्त्र मेमने के लहू में धोकर श्वेत किए" हैं (प्रकाशितवाक्य 7:14)। जिन्होंने "अपने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए, वे श्वेत वस्त्र पहने हुए [मसीह के] साथ घूमेंगे क्योंकि वे इस योग्य हैं" (प्रकाशितवाक्य 3:4)। जो "धनी हो जाए और श्वेत वस्त्र ले ले" (प्रकाशितवाक्य 3:5)। मसीह ने अपने लोगों को अपना नंगेज़ छुपाने के लिए उससे श्वेत वस्त्र ले लेने का सुझाव दिया (प्रकाशितवाक्य 3:18)। [28]देखें बाउर, 901. [29]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नाक्स प्रैस, 1993), 252. [30]मौरिस, 552.

[31]एलिज़ाबेथ आर्मस्ट्रांग रीड एंड ग्रेम मेरसर ऐड्म, *डेनियल वैन्स्टर: ए क्रेक्टर स्केच* (शिकागो: एच. जी. कैम्पबेल पब्लिशिंग कं., 1903), 123. [32]शारलट जी. होमर, "कम टु द फीस्ट," *सॉन्स ऑफ द चर्च,* संक. एवं संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1977). [33]डी. एल. मूडी, *द ओवरकमिंग लाइफ,* संपा. जिन फेडेल (ओरलांडो, फ्लोरिडा: ब्रिज-लोगोस पब्लिशिंग, 2007), 216, 273.